Vol II Issue VI Dec 2012

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary
Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 6, Dec. 2012
ISSN:-2231-5063
Available online at www.aygrt.net

ORIGINAL ARTICLE

GRT

हिंदी बालकथा साहित्य में हास्य–व्यंग्य

डॉ. रुपाली संपत दळवी

प्रस्तावना :–

हास्य और व्यंग्य को गाडी के दो पहिए माना जाता है। हास्य बिना व्यंग्य का मजा नहीं आता और व्यंग्य के बिना हास्य अधुरा लगता हैं। ये दोनों जब साथ आते है तो मनोरंजन करते हैं। हास्य और व्यंग्य में बुनयादी अंतर होता हैं। व्यंग्य चिंतन प्रधान तथा आक्रमक होता हैं। तो हास्य सरसता, आनन्द ,उल्लास,चुहल,गुदगुदी और माधूर्य भरा होता हैं। बडो के साहित्य में जिस प्रकार हास्य – व्यंग्य का प्रयोग होता हैं। उसी प्रकार बाल –साहित्य में भी हास्य – व्यंग्य की कथाएँ लिखी गई हैं। हास्य – व्यंग्य कथाएँ केवल हॅंसाती – गुदगुदाती नहीं बल्कि समाज,परिवेश में स्थित बुराइयों का एहसास भी बच्चो को कराती हैं।

हास्यपूर्ण कथाएँ बच्चों का भरपूर मनोरंजन करती है। हास्य जीवन में आवश्यक है। मानसिक स्वास्थ के लिए हास्य आवश्यक है। बालकों का जीवन हास्य बिना अधूरा है बच्चों का जीवन मानसिक रुप से स्वथ बनाने के लिए उनमें उल्लास तथा उत्साह जगाने के लिए तथा मानसिक तनाव को हटाने के लिए हास्य कथाएँ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हास्य–व्यंग्य कथाओं को वास्तविक महत्त्व स्वातंत्रोत्तर काल में ही मिला। बच्चों के लिए हास्य कथा लिखना आसान काम नहीं क्योंकि बच्चों के जीवन की अनुभूति करना कठिन होता है। बालक का जीवन ही अलग होता है उनके जीवन में सभी बातें बडो की दुनिया से भिन्न होती है।

हिंदी के कुछ रचनाकारों ने हास्य की कथाएँ लिखी है जय प्रकाश भारती ने 'चाबी वाला ढोल' नामक कथा संग्रह लिखा जिसकी सभी कथाएँ छोटे तथा बडे बच्चों को हॅंसी से लोट – पोट करती है, हास्य – व्यंग्य के सशक्त हस्ताक्षर रवीद्रनाथ त्यागी ने 'दाढी की किंमत','मास्टर भोलाराम अदालत गये' उनकी प्रसिध्द बालकथाएँ है।

डॉ.रत्नलाल शर्मा ने अपनी हास्य – व्यंग्य कथाओं से बालकों तथा किशोरों दोनों का मनोरंजन किया है। उन्होंने तीन संग्रह लिखे है – 'अप्रैल फूल','पानी चोर सियार' और 'हंस कुमार' इन कथा संग्रहों की कहानियॉं सहजता रोचकता के साथ –साथ दिशा–निर्देशन भी करती है। इन कथाओं की ओर एक विशेषता यह है कि यह कथाएँ परीकथाओं की और लोक –कथाओं की शैली में लिखी होने पर भी जीवन के यथार्थ को भी स्पष्ट करती है। ये कथाएँ अतित को वर्तमान से जोडने का काम करती है। इस कथा संग्रह की 'एक और शेर पकडा गया में आज के प्रजातंत्र और समाजवाद की शक्ति को रेखंकित किया है।

डॉ. हरिकृष्ण देवसरे ने भी '' हास्यप्रद कथाएँ''लिखी हैं जो मनोरंजक है हास्य के साथ–साथ उन्होंने इन कथाओं में आजकल की समस्याओं को भी स्पष्ट किया है। उनका कथा संग्रह 'हास्यप्रद कहानियॉं' इसका उदाहरण है। इस संग्रह की एक कथा 'मुंशीजी और रावण''

''जिसमें मुंशीजी जब दुकान का ताला बंद करके घर जाने के लिए निकलते है तब उनका सामना कलियुगी रावण से होता है जिसका एक सिर देखकर ऑंखे मलकते हुए कहते है कि रावण के दस सिर थे तब रावण का यह उत्तर कि कलयुगी रावण के दस नहीं लाखों सिर है। गेहु की बोरों में ईटों को मिलाने वाला, हिसाब में गडबडी करनेवाला सेठ दुलीचंद भी रावण का एक सिर है तथा आज के समाज के सभी चोर – बेईमान रावण का ही सिर है।

मुंशीजी का यह कहना कि रावण तो इस युग में पैदा हो गया लेकिन राम का अभी तक पता नहीं। हास्य के साथ –साथ व्यंग्यत्मकता से समाज में फैले भ्रष्टाचार को भी आधोरेखित करता है।'

इसी संग्रह की एक कथा ''भाषण में अव्वल कौन '' हास्य – व्यंग का सुंदर उदाहरण है। बडों तथा समाज के नियमों के बारे में बालक क्या सोचते है इस बात को उन्होंने बच्चों के भाषण द्वारा हमें बताया है। बस में बच्चों के लिए आधे टिकट की जो सुविधा है उस पर एक बच्चे का मत देखिए –

''मेरे लिए बाल वर्ष का मतलब है – आधा टिकट जी हॉं, आप हॅंसिए नहीं एक ओर बसों में हमारे लिए आधा टिकट है – लेकिन दूसरी ओर हमें अपमानित भी किया जाता है। कल मैं मम्मी – पापा के साथ बस में बैठा था। कुछ लोग कहने लगे, बच्चे को गोद में बिठाइये। पापा ने कहा इसका हमने टिकट लिया है। तभी किसी ने कहा जरा उपर पढिए
क्या लिखा है। हमने पढा आधी सवारी को सीट नहीं मिलेगी। अब आप स्वयम ही बताइए कि यह जुल्म हम बच्चों पर क्यों हो रहा है ?''

प्रेमचंद ने भी व्यंग्य के द्वारा बच्चों को इंसानी दुनिया के बारे में कुत्ते के जरिए कितनी सच्ची विडबंना को उजागर किया है उनकी कथा 'कुत्ते की कहानी' के कुछ अंश देंखिए –

कुत्ता काफी चिंतित है और सोचता है '' मैंने अपनी जाति में यह बहुत बडा ऐब देखा है कि एक – दूसरे को देखकर ऐसा काट खाने को दौडते हैं, गोया उनके जानी दुश्मनी हों। कभी –कभी अपने उज्जड भाइयों को देखकर मुझे क्रोध आ जाता है, पर मैं जब्त कर लेता हूँ। मैंने पशुओं को देखा है, ऐसे जो आपस में प्यार से मिलते हैं, एक साथ सोते हैं, कोई चूँ तक नहीं करता मेरी जाति में ये बुराई हमने आदमियों से ही सीखी है। आदमियों ही में यह दस्तूर है कि भाई से भाई लडता है, बाप बेटे से भाई बहन से भाई एक – दूसरे की गर्दन तक काट डालते हैं, बेटा

Title:_हिंदी बालकथा साहित्य में हास्य–व्यंग्य_ **Source: Golden Research Thoughts [2231-5063]** डॉ. रुपाली संपत दळवी **yr:2012 vol:2 iss:6**

बाप के खून का प्यास हो जाता है, दोस्त दोस्त का गला काटता है, नौकर मालिक को धोखा देता है। हम तो आदमियों के ही सेवक हैं, उन्हीं के साथ रहते हैं। उनकी देखा –देखी अगर यह बुराई हम में आ गई तो अचरज की कौन बात हैं ?''

इस कहानी का कुत्ता आपसी वैमनस्य, ईर्ष्या,धोखेबाजी और एक–दूसरे से लडने की प्रवृत्ति के लिए इंसानों से अपने सम्पर्क और सम्बन्ध को जिम्मेदार मानता है। इंसानी दुनिया के बारे में कुत्ते के जरिए प्रेमचंद ने कितनी सच्ची विडबंना को उजागर किया है।

श्रीकृष्ण द्वारा संपादित कथा संग्रह ''पुरस्कृत बाल – हास्य कहानियॉ '' हास्य कथाओं का अच्छा उदाहरण हैं। इसमें संकलित जपान की 'चीनी गौरिया' हास्य कथा देखिए –

'' एक बार एक व्यापारी को छः चीनी गौरैया मिल गई राजा के लिए यह बहुत बढिया सौगात होगी। उसने सोचा वह जानता था कि राजा बहुत अंधविश्वसी है और हमेशा शकुन – अपशकुन की चिंता में रहता है। हो सकता है छः चिडिया देना वह अशुभ समझे। उसने एक जपानी गौरैया भी उसमें मिला दी ताकि उनकी संख्या सात हो जाए और सात की संख्या शुभ है। राजा इतनी असाधारण सौगात से बहुत प्रसन्न हुआ उसने चिडियो की बहुत प्रसंशा की और हर एक को ध्यान से देखने लगा 'बडी अजीब बात है। राजा ने कहा'इनमें एक जपानी लगती है।'

व्यापारी को समझ में नहीं आया कि क्या कहें। वह डर गया और सिर झुका लिया लेकिन जपानी गौरैया अपनी चोंच खोलकर बोल पडीं, ''महाराज, मैं दूभाषिया हूॅ।''

बालकथा साहित्य में अपनी हास्य – व्यंग्य की विशेषताओं के कारण ही यह कथाऍ अधिक लोकप्रिया हुई है। ये कथाऍ बाल –पाठक का मनोरंजन करने के साथ –साथ उन्हें समाज के प्रश्नों से भी अवगत कराने का कार्य करती है। हॅसते –हॅसते यह कथाऍ बाल – पाठक हो व्यंग्य की चुटकियॉ भी लेती है और समाज प्रबोधन का कार्य भी करती हैं।

बालपत्रिका चंपक, चंदामामा,पराग, नंदन बालभारती ..... जैसी पत्रिकाओं ने हास्य –व्यग्य कथाऍ प्रकाशित की है। बालकथा साहित्य में हास्य व्यंग्य को अपनाकर अनेक लखेक बालकथा लिख रहे है।

हास्य – व्यंग्य कथाऍ बालकथा साहित्य का महत्त्वपूर्ण प्रकार हैं जिसने बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक सहकार्य दिया है।

संदर्भ

1. हास्यप्रद कथाऍ'   डॉ. हरिकृष्ण देवसरे'
2. कुत्ते की कहानी'   प्रेमचंद
3. पुरस्कृत बाल –   हास्य कहानियॉ सं. श्रीकृष्ण
4. बालसाहित्यः समीक्ष के प्रतिमान और इतिहास लेखन – डा. सरोजनी पाण्डेय

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net